भूटान की नेशनल एसेम्बली में प्रधानमंत्री का भाषण

(दिनांक 17 मई, 2008)

मेरे लिए ये बड़े सौभाग्य की बात है कि मुझे भूटान की नेशनल एसेम्बली और नेशनल काउन्सिल की संयुक्त बैठक को संबोधित करने का अवसर मिला है. आपके लिए भारत सरकार और वहां की जनता की हार्दिक शुभकामनाएं लेकर आया हूं.

इस ऐतिहासिक अवसर पर आपके सुंदर देश में आकर और भूटान के लोगों के साथ उनकी महान उपलब्धियों का जश्न मनाते हुए मुझे बड़ी प्रसन्नता हो रही है.

ये साल बांगचुक राजघराने का शताब्दी वर्ष है, इसी साल महामहिम जिग्मे खेसर नामग्याल वांग्चुक की ताजपोशी हुई है और भूटान ने लोकतांत्रित संवैधानिक राजतंत्र के दौर में प्रवेश किया है.

महामहिम जिग्मे सिंग्ये वांग्चुक के महान नेतृत्व और राजनीतिक सूझबूझ से ही भूटान अपनी जनता के लिए कल्याणकारी उपायों में निरंतर सुधार करते हुए पूर्ण शांति और स्थिरता के माहौल में ये उपलब्धियां हासिल करने में कामयाब हुआ है. महामहिम के शासनकाल के दौरान भूटान में अभूतपूर्व सामाजिक और आर्थिक विकास हुआ. वे भूटान के संविधान और वहां की राजव्यवस्था के निर्माता हैं. आज भूटान के लोगों को संप्रभुता प्रदान करने का महामहिम का सपना पूरा हुआ है.

अब जब भूटान अपने इतिहास के नये दौर में प्रवेश कर रहा है तो आप भारत को पहले की ही तरह अपना मित्र और भूटान प्रशंसक मान सकते हैं. भारत स्थिरता प्रदान करने वाले की तरह आपके साथ खड़ा रहेगा तथा और अधिक संपन्नता तथा खुशहाली की आपकी मुहिम में मदद देता रहेगा.

भूटान की जनता के पहले निर्वाचित प्रतिनिधियों के रूप में आपके कंधों पर विशेष जिम्मेदारी है और अपनी जनता की आकांक्षाओं को वास्तविकता में बदलने का अनोखा अवसर है.

जहां हम भारत के लोगों को लोकतांत्रिक शासनव्यवस्था के ढांचे के अंतर्गत सामाजिक-आर्थिक बदलाव के प्रयास करने का व्यापक अनुभव है, मगर हम इस बात का दावा नहीं करते कि हम सबकुछ जानते हैं या ज्ञान पर हमारा एकाधिकार है.

मगर हमें इस बात का पता है कि लोकतंत्र का मतलब सिर्फ चुनाव कराना नहीं है. लोकतंत्र में सहनशीलता के प्रति निरंतर वचनबद्धता और जनता की भलाई के लिए समाज के भरोसे के तौर पर अधिकारों का दूरदर्शितापूर्ण उपयोग आवश्यक है. इसके लिए कानून के शासन के प्रति गहरी निष्ठा की आवश्यकता पड़ती है. इसके लिए शासन की मजबूत संस्थाओं का निर्माण और दूसरों के दृष्टिकोण के प्रति सम्मान जरूरी है.

मैं आपको भरोसा दिला सकता हूं कि आज जब आपका देश इतिहास के इस नये और रोमांचक दौर में प्रवेश कर रहा है तो ऐसे समय आपको हमारा हार्दिक सहयोग मिलेगा. हम आपकी क्षमताओं के पूर्ण विकास के लिए आपके साथ इस तरह और ऐसी रफ्तार से कार्य करेंगे जो आपके अपने चुने विकास के रास्ते और प्राथमिकताओं के अनुरूप हो.

भारत को भूटान के साथ अपने आदर्श संबंधों पर बड़ा गर्व है. हमारे द्विपक्षीय संबंध कृत्रिम राजनीतिक अनुबंध पर आधारित नहीं हैं. इन्हें तो हमारे भूगोल, इतिहास, ज्ञान, धर्म-संस्कृति और

प्राचीन व्यापारिक संबंधों तथा लोगों के आपसी मेलजोल से मजबूती मिली है. साझा नियति के बारे में हमारी आकांक्षाओं को समसामयिक राजनीतिक दूरदर्शिता के रूप में अभिव्यक्ति मिली है.

जिस तरह सुंदर किरा को बनाने के लिए कई रंगों के धागों को ताने बाने में बुना जाता है उसी तरह हमारे संबंधों का ताना-बाना भी बड़ा मजबूत और विविधतापूर्ण है.

गुरु पद्मसंभव और अनेक विद्वान बौद्ध चिंतक महात्मा बुद्ध के ज्ञान और उपदेशों को भारत के महान विश्वविद्यालयों से लेकर इन पहाड़ों में आये. मगर हिमालय भी सदियों से प्रेरणा का कोई कम बड़ा स्रोत नहीं रहा है. हमारे ऋषियों और मुनियों को यहीं ज्ञान मिला.

आधुनिक के युग में हमारे संबंधों की बुनियाद स्वर्गीय नरेश जिग्मे दोर्जी वांग्चुक और पंडित जवाहर लाल नेहरू ने रखी. 50 साल पहले जब पंडित नेहरू ने भूटान की यात्रा की तो उन्हें वहां के स्त्री-पुरुष और बच्चों का अपार स्नेह मिला. इस यात्रा का उनपर अमिट असर पड़ा और वे भारत-भूटान संबंधों की विविधता और दृढ़ता को लेकर आश्वस्त हुए. उस समय उन्होंने अपने उद्‌गार इन शब्दों में व्यक्त किये :

> *"हम सिर्फ यह चाहते हैं कि आप आजाद देश के नाते खुद जिन्दगी का रास्ता चुनें और अपनी मर्जी से तरक्की के सफर पर आगे बढ़ें. इसके साथ ही हम दोनों को आपसी सद्‌भाव से रहना चाहिए."*

इस सोच के आधार पर भारत और भूटान ने शांति और मित्रता की एक अनोखी, बेजोड़ और समय की कसौटी पर खरी साझेदारी बनाई है.

आज हमारे संबंध इस बात का एक आदर्श उदाहरण हैं कि आकार और विशेषताओं के लिहाज से भारी अंतर वाले दो पड़ोसी देश किस तरह पूरे तालमेल और समझ-बूझ से रह सकते हैं. हमारे दोनों देशों का एक दूसरे की भलाई और खुशहाली में बड़ा हाथ है.

हमने आर्थिक, वाणिज्यिक और व्यापारिक संबंधों का विस्तृत ढांचा खड़ा कर लिया है. हमारे विकास सहयोग में विभिन्न क्षेत्र जैसे स्वास्थ्य, शिक्षा, बुनियादी ढांचा, संस्कृति, शहरी विकास, मानव संसाधन विकास, मीडिया और दूर संचार शामिल हैं.

मगर समय बीतता गया है और उसके साथ साथ हमारे दो देश भी आगे बढ़ते गये हैं. नयी शताब्दी में हम जिस तरह अपने संबंधों के नये दौर में प्रवेश कर रहे हैं मैं विचारों में वही समानता, आपसी समझबूझ में वही गहराई और सोच तथा आकांक्षाओं का वैसा ही समन्वय खोजने और उसे सुदृढ़ करने आया हूं जैसा अब तक हमारे संबंधों की विशेषता रहा है ताकि ये भविष्य में भी इसी तरह हमारा मार्ग प्रशस्त करता रहे. साझेदार के रूप में हम अपनी दोस्ती और आपसी सुरक्षा से पूरी तरह आश्वस्त होकर हम अपनी दोस्ती को समय के साथ साथ और सुदृढ़ बनाने के लिए कार्य करेंगे.

फरवरी 2007 में भारत-भूटान मित्रता संधि पर हस्ताक्षर एक युगांतरकारी घटना थी. इस संधि में उन सिद्धांतों का जिक्र किया गया है जो हमारे संबंधों को आधार बने हुए हैं. इसने ऐसे संबंध का आधार तैयार किया है जो एक-दूसरे के राष्ट्रीय हितों के प्रति संवेदनशील है. एक ऐसा संबंध जो एक-दूसरे से सलाह मश्विरे पर आधारित है और ऐसा संबंध जो पारस्परिक लाभ के लिए सहयोग सुनिश्चित करने पर आधारित है. यह संधि हमारी दृढ़ आस्था का प्रतीक है कि स्थिरता, शांति और आर्थिक प्रगति शांतिपूर्ण सहअस्तित्व और एक-दूसरे के प्रति सम्मान की सबसे स्थायी गारंटी हैं.

हम भूटान के लिए महामहिम जिग्मे खेसर नामग्याल बांग्चुक द्वारा प्रतिपादित परिकल्पना की प्रशंसा करते हैं. भूटान के लोगों के बारे में महामहिम के गहरे सरोकार और उनकी क्षमताओं को अधिकतम विकास के लिए नीतिगत ढांचा तैयार करने के उनके संकल्प में भूटान के लोगों के लिए बड़ी आशाएं निहित हैं.

आने वाले वर्षों में भूटान और भारत दोनों के सामने एक चुनौती यह होगी कि टिकाऊ, समावेशी और समतामूलक विकास का मॉडल कैसे तैयार किया जाए. हम आपको यह बताना चाहेंगे कि अपने अनुभवों को, जिनमें उन क्षेत्रों में हमारे अनुभव भी शामिल हैं जिनमें हमें कुछ सफलताएं मिली हैं, आपके साथ बांटने के लिए तत्पर खड़े हैं.

भूटान सूझबूझ वाले नेतृत्व से संपन्न मेहनती नागरिकों का शानदार उदाहरण है. हमें आपसे बहुत कुछ सीखना है, ऐसे आर्थिक विकास के बारे में जो न तो नाजुक पारिस्थितिकीय प्रणाली को नुकसान पहुंचाता हो और न देश की सामाजिक और सांस्कृतिक परम्पराओं के खिलाफ हो. अनियंत्रित भौतिकवाद और उपभोक्तावाद की आज की दुनिया में सकल राष्ट्रीय खुशी का विशेष महत्व है.

भविष्य की भारत-भूटान भागीदारी में हमारी पारस्परिक शक्ति और पूरकताओं का फायदा उठाया जाना चाहिए. हम चाहते हैं कि एक ऐसा ढांचा तैयार किया जाए जो लोगों को हमारे सहयोग का केन्द्र विन्दु बना सके. हमारे देशों की नौजवान आबादी को देखते हुए ये जरूरी हो जाता है कि उनकी आकांक्षाओं को पूरा किया जाए. हमारी आर्थिक नीतियां रोजगारोन्मुख होनी चाहिए. हमें मानव संसाधन विकास, कौशल सृजन और शिक्षा के क्षेत्रों में काफी अधिक निवेश करना होगा.

भारत के बाजारों में भूटान के कृषि, उद्योग और सेवा क्षेत्रों के लिए व्यापक अवसर उपलब्ध हैं. हम दोनों देशों के बीच कनेक्टिविटी में और सुधार के लिए कार्य करेंगे ताकि हमारी सरहदें पारस्परिक लाभप्रद समझ बूझ की राह बन सकें. दोनों देशों के लोगों के बीच आपसी मेल-जोल बढ़ाने तथा विद्वानों और विशेषज्ञों के आदान प्रदान की व्यापक संभावनाएं हैं.

हमें विकास और आर्थिक सहयोग की ऐसी रणनीति तैयार करनी होगी जिससे हम प्रकृति से उपहार में मिले अपने संसाधनों का उपयोग एक दूसरे के लाभ के लिए कर सकें. चुखा, कुरिछू ओर ताला के पहाड़ों और घाटियों में पैदा की जा रही बिजली से जिस तरह बिहार, पश्चिम बंगाल और दिल्ली में घरों को रोशनी मिल रही है और भूटान को आमदनी हो रही है उसके आधार पर हम कह सकते हैं कि हम सही रास्ते पर आगे बढ़ रहे हैं.

भारत और भूटान जल सुरक्षा और पर्यावरण संबंधी अखंडता के क्षेत्रों में सरकारों के बीच सहयोग का एक नया अध्याय लिखने को तैयार हैं. हिमालय के ग्लेशियर हमारी साझा संपत्ति हैं और हम ग्लोबल वार्मिंग यानी धरती के तापमान में असामान्य बढ़ोतरी की चुनौती से निपटने की रणनीति तैयार करने के लिए मिलकर बहुत कुछ कर सकते हैं.

पिछले चार दशकों से अधिक समय में हम दो देशों ने भूटान के नियोजित विकास की प्रक्रिया में मिलकर कार्य किया है. 10वीं पंचवर्षीय योजना में भी हम भूटान की सहायता के लिए मिलकर काम करने को वचनवद्ध हैं. यह अवधि भूटान के विकास की इमारत नींव बनेगी और भविष्य के बारे में आपके दृष्टिकोण का समर्थन करेगी. दसवीं योजना में हम सूझबूझ और लचीलेपन के साथ अपना सहयोग बढ़ाएंगे जो मानव संसाधन विकास, शिक्षा, सूचना और संचार टेक्नोलाजी, स्वास्थ्य, बुनियादी ढांचे और कई अन्य क्षेत्रों में आपकी प्राथमिकताओं के अनुसार होगा.

हम भूटान की न्यायपालिका, निर्वाचन आयोग और अन्य संवैधानिक संगठनों के साथ भी संस्थागत संबंध मजबूत करने की उम्मीद कर रहे हैं. हमारे संसदीय संससाधन और सुविधाएं आपके उपयोग के लिए उपलब्ध हैं.

पनबिजली विकास के क्षेत्र में हम भूटान के साथ दो नयी मेगा पनबिजली परियोजनाओं पुनात्सांगछू द्वितीय और मंगदेछू के विकास के लिए मिलकर कार्य करेंगे. हम चार नयी परियोजनाओं की विस्तृत परियोजना रिपोर्ट तैयार करने का कार्य प्रारंभ करेंगे. इन परियोजनाओं पर अमल से हमें 2020 तक भूटाने से कम से कम 5000 मेगावाट बिजली भारत को निर्यात करने का लक्ष्य प्राप्त करने में मदद मिलेगी. ये काम इस तरह से होगा कि इससे पर्यावरण को किसी तरह का नुकसान नहीं पहुंचेगा.

मुझे इस गरिमामय सदन को यह सूचित करते हुए विशेष प्रसन्नता हो रही है कि हम भारत और भूटान के बीच पहले रेल संपर्क का निर्माण शुरू करेंगे जिसके अंतर्गत हाशीमारा को फुएंटशोलिंग को 'गोल्डन जुबली रेल लाइन' से जोड़ा जाएगा. इससे भूटान भारत के समूचे रेलवे नेटवर्क से जुड़ जाएगा.

भूटान के छात्रों को भारत के प्रमुख विश्वविद्यालयों और संस्थाओं में अध्ययन के लिए प्रोत्साहित करने के उद्देश्य से हम नेहरू-बांग्चुक छात्रवृत्ति भी शुरू करेंगे.

इन सब संपर्कों को मिलाकर भूटान के साथ अगले पांच वर्षों में हमारा आर्थिक सहयोग 100 अरब रुपये के बराबर होगा. महामहिम नरेश के साथ मेरी भेंट और श्रीमान प्रधानमंत्री ल्योंछेन जिग्मी थिनले के साथ विचार विमर्श से मुझे इस बात का पक्का यकीन हो गया है कि हमारे संबंधों का भविष्य उज्ज्वल है. लोकतंत्र के इस पवित्र मंदिर में मुझे आशावाद और आत्म विश्वास की बयार बहती दिख रही है. आप बदलाव की दहलीज पर खड़े हैं और आपकी सफलता के लिए हमारी शुभकामनाएं.

भारत दक्षिण एशिया को शांति से रहते देखना चाहता है. हम अपने इस क्षेत्र में सुरक्षा, शांति और खुशहाली के लगातार विस्तृत हो रहे दायरों में अपना योगदान करना चाहता है. इसी लक्ष्य को ध्यान में रखते हुए हम भूटान के साथ द्विपक्षीय और क्षेत्रीय परिप्रेक्ष्य को ध्यान में रखकर मिलकर कार्य करना चाहते हैं. एक ऐसा भूटान जो सार्वभौम और खुशहाल हो और जो भविष्य की हमारी परिकल्पना के अनुसार केन्द्रीय स्थान प्राप्त कर सके.

इतने ध्यान से मुझे सुनने के लिए धन्यवाद और ताशी डेलेक.